भोले का रूप निराला है | By Shiv Kumar Pathak |

माथे पे चंदा सजाकर,
अंगों में भस्मी रमाकर,
अपनी जटा से,
गंगा को बहाकर,
बैठा है वो,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पों की माला है।

श्यामल रंग सजीला,
उसका तो कंठ है नीला,
मृगछाल तन पे सजाए हुए है,
भोला मेरा,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पों की माला है।

करते जब नंदी पे सवारी,
दुनिया हो जाए उनपे वारि,
सृष्टि नियंता चले जब भ्रमण को,
सब हो मगन,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पों की माला है।

डेरा कैलाश पे जमाकर,
भक्तों का ध्यान लगाकर,
करते है क्षण में समस्या निवारण,
मेरा भोला,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पों की माला है।

माथे पे चंदा सजाकर,
अंगों में भस्मी रमाकर,
अपनी जटा से,
गंगा को बहाकर,
बैठा है वो,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पों की माला है।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ad%e0%a5%8b%e0%a4%b2%e0%a5%87-%e0%a4%95%e0%a4%be-%e0%a4%b0%e0%a5%82%e0%a4%aa-%e0%a4%a8%e0%a4%bf%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%b2%e0%a4%be-%e0%a4%b9%e0%a5%88-by-shiv-kumar-pathak/